Historicity Research Journal
Volume 1 | Issue 2 | Oct 2014

ISSN:- 2393-8900

Research Article

नर्मदापुर(होशंगाबाद म.प्र.) के प्रमुख देवालय एवं उनका शिल्प

रामबाबू मेहर

सहायक प्राध्यापक (इतिहास)
शासकीय गृहविज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय होशगांबाद (म. प्र.)

***सारांश* :-**

भारतीय जीवन दर्शन आध्यात्मिक है। दार्शनिक विचारों की आधारशिला पर धर्म प्रतिष्ठित है। अतएव, दर्शन का धर्म से घनिष्ठ सम्बंध होता है और धर्म की सबसे सरल अभिव्यक्ति प्रतीकात्मक रुप में होती है, हिन्दू धर्म में यह मूर्तियों एवं मंदिरों के रुप में है। भारतीय मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य मोक्ष है जो कि ईश्वर की भक्ति से संभव है। यह भक्ति, ज्ञान तथा कर्म के साथ जुड़ी हुई है। मनुष्य ने जब भक्ति की संकल्पना की तब उसे देवालयों की स्थापना का विचार आया।अतः उसने देवालयों की स्थापना कर उसमें ईश्वर की सत्ता को प्रतिष्ठित किया। मैने शोधपत्र में मंदिरों को उनकी महत्ता के आधार पर रखने का प्रयास किया है।

शब्द संकेतः— देवालय, खुर, खट्वॉग, देवकुलिका, जीर्णोद्वार,अंतरपात्र एवं बंध।

***प्रस्तावना* :-**

भमंदिर शब्द संस्कृत वाडंमय में अधिक प्राचीन नहीं है। महाकाव्य, सूत्र—ग्रन्थ में मंदिर की अपेक्षा देवालय, देवायतन, देवकुल, देवग्रह आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है।[1]मंदिर का सर्वप्रथम उल्लेख शतपथ ब्राह्मण में मिलता है।[2]शाखांयन स्त्रोत सूत्र में प्रासाद को दीवारों, छत, तथा खिड़कियों से युक्त कहा गया है।[3]

वैदिक युग में प्रकृति देवों की पूजा का विधान था इसमें दार्शनिक विचारों के साथ रूद्र तथा विष्णु का उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद में रूद्र प्रकृति,वनस्पति, पशुचारण के देवता तथा विष्णु यज्ञ के देवता माने गये हैं।4बाद में, उत्तरवर्ती वैदिक साहित्य में विष्णु देवताओं में श्रेष्ठतम माने गए।

विष्णु परमः तदन्तरेण सर्वा अव्या देवताः।[5]

भारत की प्राचीन स्थापत्य कला में मंदिरों का विशिष्ट स्थान है। भारतीय संस्कृति में मंदिर निर्माण के पीछे यह सत्य छुपा था कि ऐसा धर्म स्थापित हो जो जनता को सहजता व व्यवहारिकता से प्राप्त हो सके।इसकी पूर्ति के लिए मंदिर स्थापत्य का प्रार्दुभाव हुआ। इससे पूर्व भारत में बौद्ध एवं जैन धर्म द्वारा गुहा, स्तुपों एवं चेत्यों का निर्माण किया जाने लगा था।कुषाणकाल के बाद गुप्त काल में देवताओं की पूजा के साथ ही देवालयों का निर्माण भी प्रारंभ हुआ।

प्रारंभिक मंदिरों का वास्तु विन्यास बौद्ध बिहारों से प्रभावित था।इनकी छत चपटी तथा इनमें गर्भगृह होता था।मंदिरों में रूप विधान की कल्पना की गई और कलाकारों ने मंदिरों को साकार रूप प्रदान करने के साथ ही देहरूप में स्थापित किया।चौथी सदी में भागवत धर्म के अभ्युदय के पश्चात (इष्टदेव) भगवान की प्रतिमा स्थापित करने की आवश्यकता प्रतीत हुई। अतएव वैष्णव मतानुयायी मंदिर निर्माण की योजना करने लगे। सॉची का दो स्तंभयुक्त कमरे वाला मंदिर गुप्तमंदिर के प्रथम चरण का माना जाता है। बाद में गुप्त काल में वृहदस्तर पर मंदिरों का निमार्ण किया गया।[6]जिनमें वैष्णव तथा शैव दोनों धर्मो के मंदिर हैं।[7]प्रारंभ में ये मंदिर सादा थे और इनमें स्तंभ अलंकृत नही थे। शिखरों के स्थान पर छतसपाट होती थी तथा गर्भगृह में भगवान की प्रतिमा, ऊँची जगती आदि होते थे। गर्भगृह के समक्ष स्तंभों पर आश्रित एक छोटा अथवा बड़ा बरामदा भी मिलने लगा। यही परम्परा बाद के कालों में प्राप्त होती है। शिल्पशास्त्र के अनुसार मंदिरों की तीन श्रेणियॉ हैं —

(अ) नागर(ब) द्रविड़ (स) वेसर

(अ)नागर—नागर शब्द नगर से बना है। सर्वप्रथम नगर में निमार्ण होने के कारण इन्हे नागर की संज्ञा प्रदान की गई। शिल्पशास्त्रके अनुसार नागर मंदिरों के आठ प्रमुख अंग है –

(अ) मूल आधार	–	जिस पर सम्पूर्ण भवन खड़ा किया जाता है।
(ब)मसूरक	–	नींव और दीवारों के बीच का भाग
(स)जंघा	–	दीवारें (विशेषकर गर्भगृह की दीवारें)
(द) कपोत	–	कार्निस
(इ)शिखर	–	मंदिर का शीर्ष भाग अथवा गर्भगृह का उपरी भाग
(ध)ग्रीवा	–	शिखर का ऊपरी भाग
(प) वर्तुलाकार आमलक	–	शिखर के शीर्ष पर कलश के नीचे काभाग
(फ) कलश	–	शिखर का शीर्षभाग

(ब)द्रविड़—यह दक्षिण भारत में विकसित होने के कारण द्रविण कहलायी। इसमें मंदिर का आधार भाग वर्गाकार होता है तथा गर्भगृह के उपर का भाग पिरामिड़नुमा सीधा होता है, जिसमें अनेक मंजिलेंहोती हैं। इस शैली के मंदिरों की प्रमुख विशेषता यह हे कि ये काफी ऊँचेतथा विशाल प्रागंण से घिरे होते हैं। प्रागंण में कई छोटे–बड़े अनेक मंदिर, कक्ष तथा जलकुण्ड होते हैं। प्रागंण का मुख्य प्रवेश द्वार गोपुरम् कहलाता है।

(स) बेसर—नागर और द्रविड़ के मिश्रित रूपको बेसर शैली की संज्ञा दी गई है। यह विन्यास में द्रविड़ शैली का तथा रूप में नागर जैसा होता है।इस शैली के मंदिर विन्ध्य र्वतमाला से कृष्णा नदी के बीच निर्मित हैं।[8]

होशंगाबाद का प्राचीन नाम नर्मदापुर मिलता है भारतीय अभिलेख विभाग के प्रथम निदेशक डॉ. जॉन फेथफुलफ्लीटने भोपाल से प्राप्त परमारवंशीय शासक उदयवर्मा के एक ताम्रपत्र के आधार पर नर्मदापुरम् की पहचान वर्तमान होशंगाबाद नगर से की है।सम्पूर्ण नर्मदापुर में नागर शैली के मंदिर हैं। नागर शैली का क्षेत्र उत्तर भारत में नर्मदा के उत्तरी क्षेत्र तक है। परंतु यह कहीं–कहीं अपनी सीमाओं से आगे भी विस्तारित हो गयी है। नागर शैली के मंदिरों में योजना तथा ऊँचाई को मापदंड रखा गया है। नागर वास्तुकला में वर्गाकार योजना के आरंभ होते ही दोनों कोनों पर कुछ उभरा हुआ भाग प्रकट हो जाता है जिसे "अस्त" कहते हैं। इसमें चौंड़ी समतल छत से उठती हुई शिखा की प्रधानता पाई जाती है। यह शिखा कला उत्तर भारत में सातवीं शताब्दी के पश्चात् विकसित हुई अर्थात परमार शासकों ने वास्तुकला के क्षेत्र में नागर शैली को प्रधानता देते हुए इस क्षेत्र में नागर शैली के मंदिर बनवाये। इसी कड़ी में नर्मदापुर के मंदिरों को देखा जा सकता है।

नर्मदापुर के पश्चिमी क्षेत्र में ही प्राचीन मंदिर हैं। इनमें नेमावर, हांडिया के मंदिर प्रमुख हैं।नर्मदापुर के इस क्षेत्र में परमारों के कला–सौन्दर्य के चिन्ह स्पष्ट रुप से प्राप्त होते हैं।

परमार कालीन मंदिर वास्तुकला में मंदिरों की योजना स्वस्तिकाकार तारकाकृत है।नागर शैली में तीन, पॉच, सात, नौ ग्यारह शिखरों वाले मंदिरों की भी जानकारी मिलती है, परंतु परमार मंदिरों की विशेषता उन मंदिरों के शिखरहैं और स्थाई शुकनासा, घण्टाकृति की छत, चौकोर स्तंभ इनकी अन्य विशेषताएँ हैं।इनमें अधिक से अधिक भाग को कलात्मक उच्चादर्शो द्वारा उत्कीर्ण किया गया है।

सिद्धेश्वर मंदिर : नेमावर[9]

यह नर्मदापुर का सबसे पश्चिमी भाग है। यह नर्मदा नदी के किनारे स्थित प्राचीन धार्मिक स्थल है।नेमावर अक्षांश–दे.22° 30′उत्तर –77° 3′ (पश्चिम) पर स्थित है।[10] नेमावर इसीलिए भी प्रसिद्ध है कि यह स्थल नर्मदा का मध्यबिन्दु कहलाता है। अमरकंटक या समुद्र से नर्मदा की दूरी यहॉ बराबर है।[11]डॉ. वाकणभर के अनुसार नेमावर का प्राचीन नाम ''नाभिपट्रम्'' रहा होगा जो कालांतर में नाभिपुरम और बाद में नेमावर हो गया।[12]

सिद्धेश्वर मंदिर को विद्वान दो विभिन्नकालों में निर्मित मानते है। पहले मूल मंदिर एक भिन्न प्रस्तर द्वारा निर्मित निर्मित हुआ तथा उसके लगभग दो शताब्दियों बाद शिखर का निर्माण एक सर्वथा भिन्न प्रस्तर द्वारा हुआ है।[13]ताश्काकृत एवं सप्तरथ योजना युक्त शिव का यह मंदिर भूमिज–शैली का है।स्ट्रेला केमरिश ने भूमिज–मंदिरों को भूमि अथवा स्थान से जन्मा बताया है।[14]

सिद्धेश्वर मंदिर नर्मदा के किनारे दक्षिण मुखी स्थित है।(चित्र क्रमांक–1) मंदिर में गूढ़ मण्डप, अन्तराल एवं गर्भगृह है। मण्डप के सामने द्वार मण्डप गूढ़ मण्डप में गर्भगृह के अतिरिक्त तीन दिशाओं में प्रवेश द्वार है। मंदिर का गर्भगृह एवं शिखर खालीपन लिए हुए है। मंदिर के सामने प्रवेश द्वार में चैत्यनुमा खिड़किया है। ये गर्भगृह की ऊपरी कार्निस से लेकर शिखर पर आमलक तक चली गई है।

सिद्धेश्वर मंदिर में गर्भगृह का अलंकरण प्रसिद्व खजुराहो (म. प्र.) के कन्दारिया महादेव मंदिर के समान है। मंदिर की पीठ पर कीर्ति–मुखों की एक आड़ी पक्तिं बनी हुई है। मंदिर की जंघा पर ताकों की सुंदर पक्तियॉं है जिनमें

देवियों की प्रतिमाएं उत्कीर्ण की गई हैं। मंदिर के ताक और कोण प्रतिमाओं से परिपूर्ण है यहॉ की प्रतिमायें शैवमत से संबंधित हैं। जिनमें चतुर्मुखी शिव, ताण्डव करते शिव, शोडष हाथों वाले अन्धकान्तक सूर्य, भैरव, ब्रह्मा–ब्राहणी आदि प्रतिमाएंविशेष उल्लेखनीय है।[15]

सिद्धेश्वर देवालय के बेदिबन्ध में खुर, कुम्भ और कलश बंधन है।जिसमें अन्तर पात्र की पुनरावृत्ति हुई है। इसमें सात कूटस्तम्भ हैं। जिनके मध्य में लता अलंकरण परिवर्तना पद्वति में उत्कीर्ण है। बेदिबन्ध और जंधा को व्याल आकृति रत्न तथा पुष्प आकृतियों से सुन्दर ढंग से अलंकृत किया गया है। मध्यबंध की देवकुलिका में ब्राह्मण देवी–देवताओं की मूर्तियां स्थापित की गई हैं।

सिद्धेश्वर मंदिर के तीनों प्रवेश द्वार दो स्तंभों से युक्त हैं जिन पर प्रतिमायें स्थापित की गई हैं। बाद में कुछ अर्धस्तम्भ भी स्थापित है। प्रवेश द्वार पर अलंकृत चौखट हैं। वर्गाकार मण्डप और गर्भगृह के मध्य अन्तराल है। अन्तराल के सामने दो स्तंभ मण्डप के अन्य स्तंभों की भांति आधार स्तम्भों का काम करते हैं। स्तंभों के बड़े ताक शिवगणों की प्रतिमाओं से सुसज्जित हैं। मध्यवर्ती ताक में चतुर्हस्त शिव दो हाथों में वीणा, एक हाथ में डमरू और शेष एक हाथ में खट्वांग लिए हुए हैं। नीचे नंदी उत्कीर्ण है।मण्ड़ोवर के भद्रों में चामुंडा, नटराज और त्रिपुरान्तक बध की अकृतियां परिक्रमा पथ में हैं। मण्ड़ोवर में पांच कर्ण हैं जिनमें शिव, अष्ट दिक्पाल आदि की आकृतियां निर्मित हैं।[16]कपिला में कुबेर और मात्रिका प्रतिमाएं हैं।

मंदिर के जंघा और शिखर भाग में अप्सराएं अंकित हैं। छज्जे में छः अन्तर पत्र हैं तथा ग्रीवा में गागरक अलंकरण है। मंदिर का शिखर विशिष्ट प्रकार का है।उर्ध्वता तथा दीर्घता में यह मंदिर उदयपुर(म.प्र.) के उदयेश्वर मंदिर से बड़ा है।[17]इसके शिखर में नौ उर्ध्वाकार उरू–श्रंग हैं।[18] शिखर में छः कूट हैं। आमलक शिला के ऊपर ग्रीवा और कलश का भाग नष्ट हो गया हैं।मंदिर के शिखर के दक्षिणी भाग में शुकनासिका है जिसमें लतापत्र और नटराज अलंकृत हैं। मंदिर का गर्भगृह वर्गाकार है।

नेमावर मंदिर के मण्डप में कक्षासन है। जिनमें स्त्री–पुरूष आकृतियां तथा विधाधर उत्कीर्ण हैं। महामण्डप के छोटे स्तंभों की शहतीरों के ऊपर पूणतः अलंकृत क्षिप्त वितान है। अन्तराल के ऊपर कमलपुष्प उत्कीर्ण वितान है। गर्भगृह की नन्दनी–द्वार शाखाओं में लता श्वल्व, रूप, पुष्प और स्तंभ शाखाएं हैं। गंगा और यमुना अपने निश्चित स्थानोंपर चंवर धारणियों सहित उत्कीर्ण की गई हैं।(चित्र क्रमांक–3एवं4) द्वार पर ही शिव व कुबेर भी स्थापित हैं।सप्तमात्रकाओं में ब्राह्मणी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी और चामुण्डा प्रतिमायें अलंकृत तथा सुन्दर ढंग से उत्कीर्ण की गई है। मंदिर के ललाट विम्ब में गणेश शोभायमान हैं।

सिद्धेश्वर मंदिर के गर्भगृह की दीवारें आड़ी हैं तथा क्षिप्त वितान है।(चित्र क्रमांक–5) गर्भगृह के भीतर अर्धपट्ट में शिवलिंग स्थापित है। सिद्धेश्वर मंदिर का संपूर्ण वास्तुशिल्प भूमिजशैली का है।

ऋद्धेश्वर मंदिर–हांडिया

हांडिया नर्मदापुर का एक प्राचीन नगर है। हांडिया की स्थिति 122° 29′ उ. तथा 76° 59′ पू. के मध्य है। यह वही स्थान है जहॉ पौराणिक ऋषि जमदग्नि और हैध्य वंशीय प्रतापी राजा कार्तवीर्य सहस्त्रार्जुन कामिलन हुआ था।[19] यहॉ भी नर्मदा नदी के तट पर प्राचीन शिवमंदिर है जो भगवान ऋद्धेश्वर के नाम से जाना जाता है। प्रायः ऐसा माना जाता है कि इसे धन के देवता कुबेर ने बनवाया था।[20] इस मंदिर में गुप्तकालीन एवं परमारकालीन शिल्प सौंदर्य मिलता है।(चित्र क्रमांक–2)

ऋद्धेश्वर मंदिर अपने प्राचीन स्वरूप में नहीं है यहॉ बचे अवशेषों को पुनः एकत्रित कर मंदिर खड़ा किया गया है। बार–बार जोर्णोद्वार के कारण भी मंदिर का मूल स्वरूप नष्ट हो गया है। इस मंदिर के सभामण्डप में जो स्तंभ स्थापित हैं उनमें उत्तर एवं दक्षिण के तीन स्तंभ गुप्तकालीन हैं तथा शेष स्तंभ परमार कालीन हैं। गुप्तकालीन स्तंभों पर ताम्रपत्रों का अंकन स्पष्ट है। व्याल, रत्न आदि अलंकरण भी स्पष्ट हैं।

यह मंदिर मूल रूप में शिव मंदिर है। सभा मण्डप के पश्चिमी स्तंभों से यह स्पष्टहै। मंदिर के गर्भगृह के द्वार के ठीक सामने बाहर की ओर ऊपर नवदुर्गा की पट्टी स्थापित है परंतु इस पर चूना पुताहोने से आकृतियॉ स्पष्ट नहीं हैं सभी–मण्डप स्तंभोंपर शिवगणों की प्रतिमायें सुन्दर ठंग से निर्मित की गइ हैं। एक स्तंभ के अन्तर भाग में विष्णु की प्रतिमा तथा उनके ठीक ऊपर पूर्वाभिमुखी शिव प्रतिमा प्रतिस्थापित की गई है। इस स्तंभ के दक्षिणी भाग में भगवान लकुलीश की एक हाथ में मातुलिंग धारण किए प्रतिमा है जो कि दुर्लभ है।यहॉ शिव के अवतारों में लकुलीश प्राप्त होना पाशुपत सम्प्रदाय की उपस्थिति का घोतक है। स्तंभ के पश्चिमी भाग में शिव प्रतिमा है। शिव दाएं हाथों में अक्षमाला तथा त्रिशूल व बायें हाथों में सर्प एवं घटकलश धारण किए हुए हैं। शिव का वाहन नंदी नीचे है। इसी स्तंभ के उत्तर में विष्णुप्रतिमा भी है। विष्णु हाथों में अक्षमाला, गदा, चक्र और शम्ब धारण किए हुए हैं।

इसी स्तंभ के पश्चिमी भाग में शिवप्रतिमा स्थापित की गई है जिसमें नीचे नंदी प्रदर्शित है। मंदिर प्रारंभ से शैव मतालंबियों का ध्यानक्षेत्र रहा है। विष्णु प्रतिभा की प्राप्ति वैष्णव सम्प्रदाय की ओर संकेत करती है। संभवतः यहॉ शैव मत के साथ वैष्णव मत का भी प्राचार–प्रसार हुआ होगा।यहीं के पाषाण खण्डों का उपयोग कर मराठा काल में इसका पुर्ननिमार्ण कराया गया है।[21] मंदिर अपने मूल स्वरूप में नही है, फिर भी मंदिर को ध्यान से देखने पर प्रतीत होता है कि यह मंदिर नागर शैली की परमारकालीन मंदिर वास्तुकला में निर्मित है।

पिंगलेश्वर महादेव मंदिर–नेमावर[22]

पिंगलेश्वर महादेव मंदिर नेमावर में नर्मदा के उत्तरी तट पर स्थित है। यह मंदिर सिद्धेश्वर मंदिर से थोड़ी दूरी पर अवस्थित है। यह सिद्धेश्वर मंदिर से बाद का बना प्रतीत होता है ।इस मंदिर के आस–पास आधुनिक घर बन गए हैं जिससे इसका मूल स्वरूप लगभग समाप्त हो गया है। मंदिर में जाने के लिए भी किसी के घर में से जाना पड़ता है।(चित्र क्रमांक–6)

पिंगलेश्वर महादेव मंदिर में सभा मण्डप व गर्भगृह हैं। इसका सभामण्डप ही महत्वपूर्ण हैइसमें आठ स्तंभों पर मंदिर अवस्थित है। ये स्तंभ पूर्णतः सादे हैं लेकिन सबसे ऊपर जहॉ छत से स्तंभ लगे है उन पर कीचकों को उत्कीर्ण किया गया है। इनके पेट में छिद्र हैं जो संभवतः रात्रि में प्रकाश के लिए दिए रखने के काम आते होगें ।सभी स्तंभों के ऊपर अवस्थित कीचकों के हाथों में नाग तथा खट्वांग आदि आयुध स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहे हैं। इनके गले में मालाओं का अंकन बाद में मंदिर पुर्ननिर्माण के समय किया गया होगा। सभामण्डप के ठीक बीच में एक नंदी प्रतिमा बैठी मुद्रा में अवस्थित है जिसके गले में घंटी का स्पष्ट अंकन है तथा पैरों में पायल का अंकन भी स्पष्ट हैं। नंदी के पास (नीचे)वर्गाकार क्षेत्र में ठीक सामने नवगृहों के आयुधों का स्पष्ट अंकन है।

पिंगलेश्वर महादेव मंदिर का गर्भगृह सादा है। इसकी दीवालों पर कोई भी अंकन नही है। परंतु तीनों ओर ताके अवश्य निर्मित हैं। संभवतः पूर्व में यहॉ प्रतिमाओं को स्थापित किया गया होगा, परंतु वर्तमान में प्रतिमायें नहीं हैं। गर्भगृह में शिवलिंग स्थापित है जिसका आकार बहुत ही छोटा है। यह शिव मंदिर है। नवगृह प्रतीकों की प्राप्ति से स्पष्ट है कि यहॉ नवगृह पूजा पर भी विशेष ध्यान दिया जाता था।

विष्णु मंदिर–नेमावर

विष्णु मंदिर नेमावर में ग्वाल टेकरी पर अवस्थित है। मंदिर का आर्धभाग ही शेष है तथा अधिकांश ध्वंसावशेष विखरे पड़े हैं। मंदिर के वास्तु शिल्प को देखने से लगता है कि यह मंदिर 11वीं शताब्दी ई. में परमारकाल में बनवाया गया होगा।[23] मंदिर पंचरथ योजना में पूर्वाभिमुखी नर्मदा नदी की ओर है। यह मंदिर जब अपनी पूर्ण अवस्था में होगा तब भव्य एवं विशाल मंदिर रहा होगा। मंदिर के आस–पास जंघा भाग एवं अर्ध्वभाग में विभिन्न प्रतिमाओं का अंकन है। मंदिर के गर्भगृह में चार–चार आधार स्तंभ हैं जिन पर शिखर भाग रहा था। संपूर्ण मंदिर एक जगती पर निर्मित है। इसमें गूढ़ मण्डप तथा अंतराल भी हैं। परंतु मंदिर का वितान नहीं है। मंदिर के बेदिबंध में खुर, कुंभ कलश और कपोत बंधन हैं ।मंदिर बेदीबंध, अंतरपात्र और कीर्तिमुखों से अलंकृत है। मंदिर में मणिबंध और मध्यबंध सुन्दर ठंग से स्थापित किए गए हैं।

विष्णु मंदिर का अंतराल दो अलंकृत स्तंभों से सुसज्जित है जिनके ऊपर मंदिर का समतल वितान रहा होगा।[24]इसमें नटराज शिव की प्रतिमा भव्यता के साथ उकेरी गई है। मंदिर के जंघा भाग में अभियान पर जाते हुए सैनिकों की पक्तिबद्ध श्रंखला निर्मित की गई है।[25] मंदिर में गजथर और नरथर गढ़वाल कला के प्रभाव को दिखलाते हैं।[26]गर्भगृह के प्रवेश द्वार पर सात द्वार शाखाएं बनी हैं। यह द्वार सुभद्र कोटिका है। मंदिर के ललाट बिम्ब में विष्णु की आसनस्थ प्रतिमा सुन्दर ढंग से स्थापित की गई। उत्तर में सप्तमात्रकाएं निर्मित हैं। मध्य में वीणाधर शिव हैं ।मंदिर के प्रवेश द्वार के दोनों ओर विष्णुगण स्थापित हैं। जो हाथों में चक्र तथा गदा आयुधों से सुसज्जित हैं। गंगा तथा यमुना की प्रतिमायें भूमिज–शैली की प्रमुख विशेषतः है। जो इस मंदिर के प्रवेश द्वार पर प्रतिस्थापित हैं। इसके ठीक बाद में दोनों ओर दीपधारिणी स्त्रियों भी हैं ।इनके ठीक बाद द्वार के दायीं और शंख धारण किए स्त्री तथा बांयी ओर अग्निकुण्ड धारण किए स्त्री निर्मित है ।उनके समीप ही कमल–कलिका धारण किए स्त्री दांयी ओर तथा शंखधारण किए स्त्री बायीं ओर है। इन परिचारिकाओं–प्रासादिकाओं के पीछे दोनों ओर एक–एक कुबेर प्रमिमायें भी स्थापित की गई हैं। इनके बाद दोनों ओर किन्नर प्रतिमायें तथा ऊपर समुद्रमंथन का अद्‌भुत दृश्य उत्कीर्ण है। इसी प्रवेश द्वार के ठीक नीचे नृत्यरत समूह है, जिनके आगे चन्द्रशिला बनी हुई है। चन्द्रशिला के दाहिनी ओर पुनः समुद्र मंथन का दृश्य प्रदर्शित है ।मंदिर सम्पूर्ण नहीं है फिर भी भव्यता लिए हुए है।

गुप्तेश्वर मंदिर – खिरकिया(22̊ 7′उ. तथा 76̊ 55′पू.)

हरदा शहर से दक्षिण में खिरकिया से लगभग 12 किलोमीटर दूर तथा होशंगाबाद–बुरहानपुर के बीच पुराने राजमार्ग पर छीपावड़ से लगभग आठ कि.मी. की दूरी पर चारवा ग्राम स्थित है।[27] यहीं पर प्राचीन गुप्तेश्वर महादेव का मंदिर अवस्थित है।[28]

गुप्तेश्वर मंदिर पूर्व में मलबे से दबा हुआ था, लेकिन 19वीं शताब्दी के अंतिम पच्चीस वर्षो में खुदाई के समय इस मंदिर के अवशेष प्राप्त हुए।[29] यह मंदिर लगभग 10वीं–11वीं शताब्दी के मध्य निर्मित हुआ है। विगत वर्षो में स्थानीय लोगों द्वारा यहॉ बार–बार जीर्णोद्वार कराये जाने से इस मंदिर का मूल स्वरूप नष्ट हो गया है।

गुप्तेश्वर महादेव मंदिर मूलतः परमारकालीन भूमिज शैली में बना बड़ा ही भव्य मंदिर है। सप्तरथ योजना में निर्मित यह मंदिर कलात्मक ढंग से बहुत सुन्दर है। मंदिर की बाह्य भित्तियों तथा शिखर पर सीमेंट का प्लास्टर कर दिये जाने से मंदिर अपने मूल स्परूप में नही है। इसी तरह मंदिर की जंघा भाग पर पूर्व में निर्मित प्रतिमाओं पर भी लोगों ने पूजन के दौरान सिंदूर पोत दिया है। जिससे इन प्रतिमाओं के आयुधों की पहचानसंभव नहीं है।

पूर्वाभिमुख निर्मित मंदिर की पश्चिमी दीवार पर सूर्य की सुन्दर स्थानक प्रतिमा स्थापित की गई है। मंदिर का अंतराल एंव गर्भगृह ही वर्तमान में मूल रूप में शेष है। वस्तुतः यह शिव मंदिर है जो कि गुप्तेश्वर मंदिर के नाम से जाना जाता है। मंदिर के अन्तराल में शिव को विभिन्न रूपों व मुद्राओं में सुन्दर ढंग से निर्मित किया है।

मंदिर के प्रवेश द्वार की द्वारशाखा त्रिशाख प्रकार की है। इसकी ऊपरी पट्टी पर चार गणेश प्रतिमा अवस्थित हैं। नीचे की पट्टी पर सप्तमात्रकाएं तथा मध्य की पट्टी पर नटराज शिव की प्रतिमा स्थापित है।प्रवेश द्वार वर्गाकार संरचना पर आधारित है।

गर्भगृह के प्रवेशद्वारों के दोनों ओर शैव द्वारपालों, पांच परिचरिकाओं तथा चन्द्रशिला का अंकन किया गया है।गुप्तेश्वर मंदिर के गर्भगृह में शिवलिंग भूतल पर प्रतिस्थापित है। वहॉ तक पहुॅचने के लिए आधुनिक सीढ़ियों बनी हुई हैं।[30]

तिलक–सिन्दूर मंदिर[31]–खतामा

सतपुड़ा की सुरम्य वादियों में स्थित तिलक–सिन्दूर मंदिर होशंगाबाद से मात्र 32 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह 22° 25′ उ. तथा 77° 45′ पू. के मध्य स्थित है। होशगांबाद शहर से लगभग 46 कि.मी. की दूरी पर खतामा गॉव है। इस ग्राम में तिलक–सिन्दूर नामक एक छोटी पहाड़ी है जो सतुपड़ा पर्वत श्रंखला का भाग है।मंदिर पहाड़ी को काटकर निर्मित किया गया है।(चित्र क्रमांक–7)

यह पुरातत्वीय महत्व का महत्वपूर्ण मंदिर है। यह मंदिर लगभग 1230 फुट ऊॅचाई पर स्थित है जहॉ पहुचने के लिए 70 सीड़ी बनी हुई है। यह महादेव का मंदिर है।[32]तिलक सिन्दूर मंदिर राज्य सरकार द्वारा संरक्षित है। यह मंदिर अत्यन्त सादी संरचना है। यहॉ चार स्तंभों पर आधारित मण्डप है जिसके मध्य में वर्गाकार गर्भगृह बना हुआ है। गर्भगृह में शिवलिंग प्रतिस्थापित है। गर्भगृह के द्वार के ठीक सामने नंदी द्वय की प्रतिमायें स्थापित की गई हैं।जो बहुत बाद की है। प्रदक्षिणापथ गर्भगृह के चारों ओर की चट्टान काट कर निर्मित किया गया है। यह मंदिर लगभग 10वीं–11वीं शताब्दी ई0 का है।मंदिर के बायीं ओर ऊपरी भाग में भी पहाड़ को काटा गया है। जिसे लोग पार्वती महल कहते हैं। संभवतः मंदिर की गुम्बद तैयार करने के लिए उसको काटा जा रहा था, परंतु वह अधूरा ही कटा हुआ है। मंदिर के बाहरी भाग में कुछ प्रतिमायें खुले स्थान में स्थापित है जो ज्यादा पुरानी नहीं हैं।[33]

संदर्भ–

1.कंवल, रामलाल –''प्राचीन मालवा में मंदिर वास्तुकला'' स्वाती पब्लिकेशन, दिल्ली, 1984, पृ. 20
2.सहाय, सच्चिदानंद– ''मंदिर स्थापात्य का इतिहास'' बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1981,पृ. 3
3.शांखायन स्त्रोत सूत्र – 16.18 / 13,17
4.उपाध्याय, वासुदेव –''प्राचीन भारतीय स्तूप, गुहा एवं मंदिर'' बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1972, पृ.–194
5.ऐतरेय ब्राह्मण– आनंदाश्रम संस्कृत सीरीज, पूना, (सायण व्याख्या सहित) 19301 / 1
6.श्रीवास्तव, शशिबाला –''भारतीय मंदिर एवं मूर्तियॉ'' रामानंद विद्याभवन, दिल्ली, 1989, पृ. 5–6
7.उपाध्याय, वासुदेव – पूर्वोक्त, पृ. 205
8.सहाय, सच्चिदानंद – पूर्वोक्त, पृ. 4–5
9.प्रोगेस रिपोर्ट ऑफ दि आर्कियालाजीकल सर्वे ऑफ इण्डिया, वेस्टन सर्कल – 1921, पृ. 98
10.इन्दौर स्टेट गजेटियर – (पुर्नमुद्रित) गजेटियर इकाई, राजभाषा एवं संस्कृति विभाग, म.प्र., भोपाल, 1996, पृ. 315
11.द्विवेदी, अयोध्या प्रसाद –''संस्कृति – स्रोतास्विनी नर्मदा'', मध्यप्रदेश हिन्दी गन्थ .अकादमी, भोपाल, 1987, पृ. 112
12.द्विवेदी, शिवाकांत – ''टेम्पल स्कल्पचर आफ इंण्डिया'' आगम कला प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 184
13.व्यास, हंसा –''प्राचीन मालवा में शैवधर्म'' श्री काबेरी शोध संस्थान, उज्जैन, 1994, पृ. 92
14.कैमरिश, स्ट्रेला –''दि हिन्दू टेम्पल'' मोतीलाल बनारसीदास 1968,पृ. 218 –219, 389
15.व्यास, हंसा – पूर्वोक्त, पृ. 92
16.द्विवेदी शिवाकांत – पूर्वोक्त, पृ. 86
17.उद्येश्वर मंदिर विदिशा जिले में गंजबासोदा के उदयपुर ग्राम में स्थित है
18.व्यास, हंसा – पूर्वोक्त, पृ. 92
19.होशंगाबाद डिस्ट्रिक्ट गजेटियर –गजेटियर संचालनालय, संस्कृति विभाग, मध्यप्रदेश, भेापाल, 1994, पृ. 369
20.वही. पृ. 370
21.माथुर, प्रकाशेन्दु –''नर्मदा परियोजनांतर्गत डूब क्षेत्र में चिन्हांकित स्मारक एवं स्थल'' पंकजराग(सं.)
कल्चरल हेरिटेज ऑफ नर्मदा वैली, 2007 पृ. 263
22.स्वयं के सर्वेक्षण पर आधारित।
23.नागार्च, बी.एल. –''देवास जिले में परमार कालीन मंदिर एंव उनकी शिल्पकला'' पुरातत्व – देवास जिले की पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पृ. 49
24.द्विवेदी, शिवाकांत – पूर्वोक्त, पृ. 86

25.वही. पृ. 103
26.वही. पृ. 100
27.कोसेंस, हेनरी – ''एन्टिक्वेरियन रिमेन्स इन दी सेन्ट्रल प्राविन्सेज एण्ड बरार'', 1971, पृ.–42
28.होशंगाबाद जिला गजेटियर–पूर्वोक्त, पृ. 367, पुष्पलता सिंह–2008''धरोहर हरदा जिला– इतिहास, संस्कृति एवं पर्यटन'' जिला पुरातत्व संघ, हरदा म.प्र., पृ. 13
29.होशंगाबाद जिला गजेटियर – पूर्वोक्त, पृ. 368
30.स्वंय के सर्वेक्षण पर आधारित।
31.कोसेंस, हेनरी – पूर्वोक्त, पृ. 42
32.वही. पृ. 42
33.स्वंय के सर्वेक्षण पर आधारित।

(चित्र क्रमांक–1)

(चित्र क्रमांक–2)

(चित्र क्रमांक–3)

(चित्र क्रमांक–4)

(चित्र क्रमांक–5)

(चित्र क्रमांक–6)

(चित्र क्रमांक–7)